Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed/Referred Journal
ISSN 2454-3144 (O)
Volume 09, Issue 02, May 2022 (Special Issue)
http://hillquest.pratibha-spandan.org

बाँसुरी एवं शहनाई वादक पं॰ रघुनाथ प्रसन्ना का सांगीतिक जीवन

VINAY GANDHARV & DR. ANKIT BHATT

Ph.D. Research Scholar, Department of Music, Banasthali Vidyapith, (Rajasthan)

Assistant Professor (Sitar), Performing Arts Department Bansathali Vidyapith, (Rajasthan)

सार संक्षेपिका

भारतीय शास्त्रीय संगीत में बनारस घराने का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। बनारस घराना गायन, वादन और नृत्य तीनों कलाओं में निपूर्ण एवं विख्यात है। बनारस अपने संगीत के लिए एक तीर्थ स्थल के रूप में विश्वभर में प्रसिद्ध है। यहां महान गायक वादक हुए, जिनमें पं॰ रघुनाथ प्रसन्ना जी हैं जिन्होंने बाँसुरी एवं शहनाई जैसे सुषिर वाद्यों में महारत हासिल की और इन दोनों वाद्यों को अपनी गरिमा प्रदान की।

भूमिका

शहनाई तथा बाँसुरी भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्राचीन एवं क्लिष्ट वाद्य हैं। शहनाई की मंगल ध्वनि से ही मंगल कार्यों की शुरूआत होती है। जब भी इन दोनों वाद्यों की बात होती है तो पं॰ रघुनाथ प्रसन्ना जी का नाम सम्मानपूर्वक लिया जाता है। पं॰ रघुनाथ प्रसन्ना जी उन गिने चुने कलाकारों में से एक है जो शहनाई तथा बाँसुरी दोनों के वादन में सिद्धहस्त थे। पं॰ रघुनाथ प्रसन्ना जी का जन्म अप्रैल 1913 में राम नवमी के आस-पास पं॰ गौरी शंकर जी (शहनाई वादक) के घर वाराणसी में हुआ। पं॰ गौरी शंकर जी के तीन पुत्र थे। जिनमें पं॰ रघुनाथ प्रसन्ना, पं॰ भोलानाथ प्रसन्ना (पं॰ हरिप्रसाद चैरसिया जी के गुरु) तथा पं॰ विष्णु प्रसन्ना जी थे। पं॰ रघुनाथ प्रसन्ना ने संगीत की शिक्षा अपने पिता पं॰ गौरी शंकर तथा बनारस के प्रसिद्ध गुरु पं॰ दाऊ जी मिश्रा से प्राप्त की।

शोधकार्य का उद्देश्य

वर्तमान समय में युवा पीढ़ी पाश्चात्य संगीत तथा वाद्यों की ओर ज्यादा आकर्षित है। जिस कारण उनका रूझान भारतीय शास्त्रीय संगीत की ओर कम है। भारतीय शास्त्रीय संगीत में सुषिर वाद्य में बाँसुरी एवं शहनाई लोकप्रिय तथा कठिन वाद्य यंत्र है। कठिनत्तम वाद्य होने के कारण युवा पीढ़ी का रूझान कम है। इसलिए बाँसुरी तथा शहनाई जैसे लोक वाद्य को शास्त्रीय संगीत में लोकप्रिय बनाया। शोध का प्रभाव संगीत विद्यार्थी के लिए लाभदायक हो इसके लिए पं॰ रघुनाथ प्रसन्ना जी की संगीत यात्रा उनके घराने की परम्परा, तथा किस तरह उन्होंने बाँसुरी को आम जनमानस तथा शिष्यों में पंहुँचाया शोध का मुख्य उद्देश्य रहेगा।

विधि

सर्वेक्षणात्मक विधि

पं॰ रघुनाथ प्रसन्ना जी द्वारा बनारस घराने की शहनाई वादन परम्परा के साथ-साथ बाँसुरी वाद्य का प्रवेश

लगभग 1929-30 में पं॰ जी कूच बिहार (पश्चिम बंगाल) के राजा के दरबार में अपने पिता पं॰ गौरी शंकर जी के साथ रहा करते थे और राजा के दरबार में नौबत खानों में शहनाई वादन किया करते थे। पं॰ रघुनाथ जी ने वहां पर किसी व्यक्ति को त्रिपुरा बाँसुरी का वादन करते सुना जिसकी ध्वनि उनको बहुत ही प्रिय लगी, जिज्ञासावश पं॰ जी ने उन व्यक्ति से

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed/Referred Journal
ISSN 2454-3144 (O)
Volume 09, Issue 02, May 2022 (Special Issue)
http://hillquest.pratibha-spandan.org

बाँसुरी सिखाने का आग्रह किया लेकिन उन्होंने सिखाने से साफ मना कर दिया। पं॰ जी बार-बार उनके पास जाते उनको देखकर जंगल से बांस का टुकड़ा काट लाते और बजाने का प्रयत्न करते लेकिन सफल नहीं होते। पं॰ रघुनाथ प्रसन्ना जी भगवान शंकर के भक्त होने के कारण एक दिन भाग्यवश बांस के टुकड़े से ध्वनि उत्पन्न हो गई। पं॰ जी को राग-रागनियों का ज्ञान तो था ही क्योंकि पं॰ रघुनाथ जी बचपन से ही शहनाई वादन अपने पिता जी के साथ करते थे। इस तरह पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही शहनाई परम्परा में बांसुरी वाद्य का प्रवेश हुआ। त्रिपुरा बाँसुरी के बाद पं॰ जी ने कृष्णा बाँसुरी को अपनाया और अपने छोटे भाईयों और उनके बच्चों को सबको शहनाई के साथ-साथ बाँसुरी की तालिम दी।

कार्य क्षेत्र, मंच प्रदर्शन, सम्मान एवं पुरस्कार

पं॰ रघुनाथ प्रसन्ना जी ने लगभग 1950 के आस-पास आकाशवाणी लखनऊ में विभागीय कलाकार के रूप में पहली नौकरी की। उसी दौरान पं॰ जी के साथ लखनऊ आकाशवाणी में उ॰ अली अकबर खां साहब भी विभागीय कलाकार के रूप में कार्यरत थे। उ॰ अली अकबर खाँ ने जब लखनऊ से नौकरी छोड़ी तो पं॰ जी ने भी नौकरी छोड़कर इनके साथ जोधपुर आए और दोनों ने जोधपुर में राजा के दरबार में ऑर्केस्ट्रा में कार्य किया। कुछ समय बाद उ॰ अली अकबर खान साहब और पं॰ उदय शंकर जी के साथ अमेरिका जाने का तय हुआ, लेकिन पिता गौरी शंकर जी ने रघुनाथ प्रसन्ना जी को जाने से इनकार कर दिया। पं॰ रघुनाथ प्रसन्ना जी ने आकाशवाणी इलाहाबाद, बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय में शिक्षक तथा इसके उपरान्त पं॰ जी ने आकाशवाणी राँची में भी नौकरी की।

1960 के लगभग पं॰ जी मुम्बई चले गए और मुम्बई में फिल्मों में भी बाँसुरी वादन किया। मुम्बई के बाद 1966 में पं॰ जी ने दिल्ली में सांग एंड ड्रामा डिविज़न में कलाकार के रूप में कार्य किया।

पं॰ रघुनाथ प्रसन्ना जी ने आकाशवाणी, दुरदर्शन के विभिन्न संगीत सम्मेलनों में बांसुरी एवं शहनाई वादन किया था। पूरे भारत में पं॰ जी ने बड़े-2 संगीत सम्मेलनों में मंच प्रदर्शन किया। इसके अलावा पं॰ जी ने 1981 में जर्मनी, फ्रांस, हालैण्ड में शहनाई एंव बाँसुरी के कार्यक्रम किए। प्रसिद्ध सांरगी वादक उ॰ मुनिर खाँ के साथ तथा वायलिन वादक सहाय पवार जी के साथ विदेश में शहनाई के साथ जुगलबंदी की। पं॰ रघुनाथ प्रसन्ना जी को उनके कार्य के लिए देश-विदेश तथा अनेकों संस्थाओं द्वारा सम्मानित किया। 1996 में भारत के राष्ट्रपति शंकर दयाल शर्मा द्वारा संगीत नाटक अकादमी अवार्ड प्रदान किया गया।

गायकी अंग से प्रभावित वादन शैली

पं॰ रघुनाथ प्रसन्ना की बाँसुरी एवं शहनाई में गायकी अंग का समावेश था। राग प्रस्तुत करने में रागालाप, बड़ा ख्याल, छोटे ख्याल अंग की बंदिशे, विभिन्न प्रकार की ताने तथा लयकारियां प्रमुख थी। पं॰ जी का सम्बन्ध बनारस से हाने के कारण उन्होंने अपनी बांसुरी तथा शहनाई वादन में ठुमरी, चैती, कजरी होरी को भी प्रमुखता से बजाया और अपने शागिर्दों को भी सिखाते थे। इनके वादन में गमक, तन्तकारी, खटका-मुरकी, बाँट आदि होते थे।

निष्कर्ष

पं॰ रघुनाथ प्रसन्ना जी जितने महान् कलाकार थे उतने ही सरल एवं सहज व्यक्ति थे। आपका ध्यान संगीत में ही केन्द्रित रहा करता था। आपका जीवन 'सादा जीवन-उच्च विचार' के मार्ग पर ही गतिमान रहा। आपका पुरा परिवार संगीत सेवा में आज भी सेवारत है। आपने शहनाई तथा बांसुरी वादन के क्षेत्र में नए आयाम बनाए तथा अपने शागिर्दों में इस कला

को जन्म-जन्म तक अमर बनाया। आप वास्तव में एक महान् कलाकार एवं व्यक्ति थे। आप अपने सद्भावी एवं सहायक व्यवहार के कारण कलाकारों, आमजन एवं अपने परिवार में सदैव प्रिय रहे।

संदर्भ ग्रन्थ

शंकर अतुल (2015) पं॰ भोलानाथ प्रसन्ना का व्यक्तित्व एवं भारतीय संगीत में उनका योगदान, बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय।